ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 मई 2018
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-१००, वर्ष-११
ज्येष्ठ (प्रथम), विक्रमी २०७५ (मई 2018)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान्। अर्यमा देवैः सजोषाः॥ -ऋ० १। ६। १७। १

व्याख्यान-हे महाराजाधिराज परमेश्वर! आप हमको (ऋजुनीती) सरल (शुद्ध) कोमलत्वादिगुणविशिष्ट चक्रवर्ती राजाओं की नीति को (नयतु) कृपादृष्टि से प्राप्त करो। आप (वरुणः) सर्वोत्कृष्ट होने से वरुण हो, सो हमको वरराज्य, वरविद्या, वरनीति देओ। तथा (मित्रः) सबके मित्र शुत्रतारहित हो, हमको भी आप मित्रगुणयुक्त न्यायाधीश कीजिये। तथा आप [(विद्वान्)] सर्वोत्कृष्ट विद्वान् हो, हमको भी सत्यविद्या से युक्त सुनीति देके साम्राज्याधिकारी सद्यः कीजिये। तथा आप (अर्यमा) (यमराज) प्रियाप्रिय को छोड़के न्याय में वर्त्तमान हो, सब संसार के जीवों के पाप और पुण्यों की यथायोग्य व्यवस्था करनेवाले हो, सो हमको भी आप तादृश करें। जिससे (देवैः, सजोषाः) आपकी कृपा से विद्वानों वा दिव्यगुणों के साथ उत्तम प्रीतियुक्त आप में रमण और आपका सेवन करनेवाले हों। हे कृपासिन्धो भगवन्! हम पर सहाय करो, जिससे सुनीतियुक्त होके हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े॥

सम्पादकीय

सार्थक विमर्श की आवश्यकता

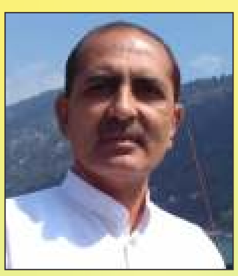

समानता सत्य का विकल्प नहीं हो सकती है और न ही सत्य व न्याय के आधार के बिना समानता स्थापित हो सकती है। इन्हीं सिद्धान्तों की अनदेखी कर हमारे राष्ट्र में समानता स्थापित करने की कोशिश की गई और इसी का यह परिणाम रहा कि आज अनेकों ऐसे मुद्दे चर्चा का केन्द्र बन जाते हैं जिनका एक सभ्य समाज व राष्ट्र में चर्चा का कोई औचित्य नहीं है। कहीं पर एक ऐसे व्यक्ति का चित्र ही प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है जिसका इस देश को तोड़ने में सबसे बड़ा हाथ रहा जिसके कारण लाखों लोगों का नरसंहार हुआ तो कहीं कोई मत अपने को अल्पसंख्यक घोषित करवाने का प्रयास करता नजर आता है। क्या संसार में अन्य कोई ऐसा राष्ट्र है जहाँ इस प्रकार से बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक का खेल खेला जाता हो? और राष्ट्र की पूरी संस्कृति को ही मिटाने की कोशिश इस प्रकार से की जाती हो और अनेक इस प्रकार के विषय विमर्श का कारण बनते रहते हैं जिनकी आवश्यकता ही न हो, ऐसे विषयों का मूल ही एक विचारशील, प्रगतिशील समाज में नहीं होता है।

हजारों साल की पराधीनता के उपरान्त मिली स्वाधीनता के समय से आज तक इस राष्ट्र के निर्माताओं द्वारा अपनी मूल संस्कृति जो वेद आधारित रही है को जानने का कभी प्रयास ही नहीं किया और इस प्रकार के सिद्धान्त प्रतिपादित उनके द्वारा किये जाते रहे जो आज इन सब समस्याओं का मूल कारण हैं। समानता के नाम पर अल्पसंख्यकवाद को खड़ा किया गया। जब संविधान की दृष्टि में सबको समान ही मान लिया गया तो अल्पसंख्यक के नाम पर विशेष अधिकारों की अनोखी व्यवस्था स्थापित करने की क्या आवश्यकता रह गई। अधिकारों का नियमन इस प्रकार किया गया कि कुछ अधिकार केवल अल्पसंख्यक कहे जाने वाले वर्गों के लिए हैं अन्यों के लिए नहीं। जब एक वर्ग विशेष को अलग अधिकार दे दिये गए तो फिर समानता कहाँ रही। और उसी का परिणाम रहा है कि उन विशेष अधिकारों को प्राप्त करने के लिए लोग अपने आप को अल्पसंख्यक घोषित कर लेना चाहते हैं, जिससे वे विशेष अधिकार उन्हें मिल सकें जो पहले से उनके पास नहीं है। अर्थात् उसी देश के नागरिक होते हुए उन्हें वे अधिकार अल्पसंख्यक होने पर ही मिलेंगे। क्या पूरे देश के लोगों को इस प्रकार से बांट देने की ओर अग्रसर किया जा रहा है जिससे सबसे बड़े अल्पसंख्यक वर्ग का अधिपत्य इस देश पर स्थापित हो जाए। बड़ी ही विचित्र बात है कि कहने को समानता और अपने ही देश के नागरिकों को समान अधिकार भी प्राप्त नहीं। उदाहरण के लिए अपनी संस्कृति को चाहे वह कैसी भी उसके प्रचार की खुली छूट

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

केवल अल्पसंख्यकों को ही है अन्यों को नहीं। जैसे पशुबलि सामान्यता निषेध है और होनी भी चाहिए लेकिन मुस्लिमों को ईद आदि पर पशुबलि की खुली छूट। समाज में नंगा घूमना न केवल अभद्रता है, अशोभनीय है अपितु निषेध भी है और होना भी चाहिए लेकिन जैन साधुओं को नंगा घूमने की खुली छूट। इस प्रकार की तुष्टिकरण की नितियों का ही परिणाम यह रहता है कि न हम संस्कृति को जान पाते हैं न उसको जनाने की प्रक्रिया बनाने की कोई व्यवस्था नियमों के अनुसार बन पाती है।

इस अल्पसंख्यकवाद ने देश को बड़ी हानि पहुचायी है। देश के टुकडों में बांटने का आधार बन जाता है यही सिद्धान्त कि देश के नागरिकों का बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक के बीच बंटवारा। देश का नागरिक देश के कानून के अनुसार चले और कानून सबके लिए समान हो अन्यथा तो देश भर के समूह अपने आप को अल्पसंख्यक ही घोषित करवाने की पंक्ति में लग जाएंगे और लगे भी हुए हैं। इसके लिए देश के कानून में बदलाव होना ही चाहिए और सभी नागरिकों के लिए समान कानून बने और ऐसा तभी हो सकता है जब समाज अनेकों मत-पंथों में न बंटा हो। जब व्यक्ति-व्यक्ति के आधार पर मत बने हुए हों, समाज का बंटवारा सत्य-असत्य पर नहीं अपितु अपने-अपने मत पर आधारित हो तो ऐसी ही स्थितियाँ होती हैं। और इसी में सबसे बड़ी विडंबना यह भी है कि आज समाज और राष्ट्र की अस्मिता का आधार धर्म न होकर धर्मनिपेक्षता है। धर्म को ठीक से जाने बिना धर्म निरपेक्षता का औचित्य क्या? समाज में व्यक्ति या तो धार्मिक होता है या अधार्मिक होता है लेकिन आधुनिक युग में और विशेषकर हमारे राष्ट्र में धर्म निरपेक्षता को ही सर्वश्रेष्ठ मान लिया गया। अर्थात् धार्मिक होने से धर्म निरपेक्ष होना ज्यादा अच्छा और अधार्मिक कोई है ही नहीं। अर्थात् जहाँ श्रेष्ठ तो हो खराब और निकृष्ट कोई है ही नहीं अर्थात् धार्मिक होना अपमानजनक, अधार्मिक कोई है ही नहीं! बड़ी विचित्र स्थिति है।

धर्म जो सनातन काल से लोगों के सुख का माध्यम रहा है वही नकार दिया गया और अपनी-अपनी इच्छा अनुसार धर्म को परिभाषित किया गया। जब तक धर्म की सार्वकालिक सर्वग्राह्य मान्यताएँ न जानी जायेंगी तब तक धर्म निरपेक्षता का कोई औचित्य ही नहीं है और यथार्थ रूप से धर्म को जान लेने के बाद धर्म निरपेक्षता की आवश्यकता ही नहीं। लेकिन धर्म निरपेक्षपता में न धर्म को जान पाते हैं और न अधर्म को। धर्म को जाने बिना उसे धारण नहीं किया जा सकता और अधर्म को जाने बिना उसे छोड़ा नहीं जा सकता। अन्यथा तो हम बन जाते हैं धर्मनिरपेक्ष, न धर्म का पता न अधर्म का।

आर्यों, आर्याओ! एसी स्थिति बनी हुई है हमारे राष्ट्र की और ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति की आध्यात्मिक, सामाजिक, नैतिक उन्नति कहाँ हो पाती है, राष्ट्र की उन्नति की तो बात ही छोड़ दीजिए। उसके लिए चाहिए सब को समानता का अधिकार, किसी का तुष्टीकरण नहीं। जहाँ धर्म की व्यवस्था हो व धर्म पर ही विमर्श हो। और इस प्रकार की व्यवस्था मत-पंथों को ही धर्म मान रहे समाज में नहीं हो सकती है, जब तक मत-पंथों को ही धर्म मानते रहेंगे तो धर्म को जानेंगे कैसे?

हाँ, धर्म को जनाया है हमारे ऋषियों ने, समानता का अधिकार है वेद के सिद्धान्तों में। समानता आर्य सिद्धान्तों से बढ़कर कहाँ हो सकती है जहाँ विद्या से ही व्यक्ति की योग्यता निर्धारित होती है। जहाँ व्यक्ति विद्या अर्जित करके ही हर प्रकार के बन्धनों से छूट सकता है, बडे से बड़ा भौतिक सुख प्राप्त कर सकता है, पारलौकिक सुख प्राप्त कर सकता है। उन्हीं सिद्धान्तों को जानकर व्यक्ति धर्म व अधर्म में अन्तर जान सकता है, जिससे वह धर्म को अपना सके, अधर्म को छोड़ सके और धर्म निपेक्षता जैसी विरोधाभासी स्थिति से बच सके। हमें आवश्यकता अधिक से अधिक लोगों तक इन सिद्धान्तों को पहुँचाने की है- प्रचार-प्रसार द्वारा, शिक्षा द्वारा जितने अधिक लोगों तक वेद विद्या पहुँचेगी उतनी ही अधिक धार्मिकता बढ़ेगी और उतना ही अधिक राष्ट्र उन्नति को प्राप्त होगा। समाज सुखी होगा, औचित्यहीन चर्चाएं देश में कम होगी। लोग धर्म, अर्थ ,काम, मोक्ष पर चर्चा करेंगे और उसी ओर बढ़ेंगे।

अतः आर्यो आर्याओं! हम सबका कर्तव्य है कि आर्य निर्माण, आर्य संरक्षण के कार्य को और अधिक तेजी से बढ़ाएं जिससे राष्ट्र को विखण्डित होने से बचाया जा सके व राष्ट्र के लोगों को सुख की ओर बढ़ाया जा सके।

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के प्रचारकगण विभिन्न विद्यालयों में आर्य विद्या से परिचित कराते हुए

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	15 मई	दिन-मंगलवार	मास-ज्येष्ठ-प्रथम	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-भरणी
पूर्णिमा	29 मई	दिन-मंगलवार	मास-ज्येष्ठ-प्रथम	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-अनुराधा
अमावस्या	13 जून	दिन-बुधवार	मास-ज्येष्ठ-द्वितीय	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-रोहिणी
पूर्णिमा	28 जून	दिन-गुरुवार	मास-ज्येष्ठ-द्वितीय	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-मूल

अंबेडकर का जातिवाद, हेडगेवार की समरसता और वर्णव्यवस्था

-आचार्य अशोक पाल

पुणे के निकट कोरेगांव में तथाकथित दलितों के सालाना जलसे पर हमले एवं उसके बाद के आंदोलन से आर.एस.एस.चिंतित है। वह हिन्दुओं की विभिन्न जातियों में समरसता बनाये रखने की वकालत करता रहा है। सन् 2015 में भी एक कुआं, एक मंदिर और एक श्मशान की अवधारणा को रखा था। RSS के लिए जाति समस्या के समाधान का यही मॉडल है। यह समरसता है, यही संघ के गुरुजी का एकात्मवाद है। काफी समय से आर्य युवा एकात्मवाद के विवेचन की मांग कर रहे थे। सो कुछ आज विचारते हैं।

क्या एकात्मवाद यही है कि देश के लोग, अनेकता में बंटे देश के जन-जन एकता का भाव रखें? क्या भिन्न-भिन्न जातियों के रहते हुए भी एकता सम्भव है? यही अतिविश्वास ही एकात्मवाद है? कबूतर बिल्ली को समक्ष देखे, आखें मूंदे और 56 इन्ची छाती दिखाकर उद्घोष करे कि केवल मैं हूँ! बिल्ली है ही नहीं! इसी विश्वास का नाम समरसता है, एकात्मवाद है? तमाम जातियों के लोग, छोटे-बड़े सभी समरसता के साथ रहें, यही संघ चाहता है-जाति बनी रहे लेकिन समरसता के साथ। यही सोच अम्बेडकर की रही! एक और वे जातिभेद के बीजपाश की बात करते रहे और जब कलम हाथ में आई तो हमें Genral, BC, OBC, SC, ST आदि नवीन जातियों में बाँटना ही जातिभेद का बीजनाश समझा और इन नवीन जातियों को समरसता से, एकात्मवाद से एक संविधान को मानने की सलाह देते हुए अपने ही मॉडल की धज्जियां बिखेरते रहे।

वहीं दूसरी और जातिभेद के बीजनाश की रामबाण औषधि-वर्णव्यवस्था को नकारते भी रहे। उन्हीं के प्रभाव में आज RSS/संघ भी वर्णव्यवस्था को दकियानुसी बताने से गुरेज नहीं करता। यह अज्ञानता एवं नासमझी ही है। विदेशी ताकतें भी धर्म ग्रन्थों द्वारा प्रतिपादित जातिवाद को दग्धबीज करने की संजीवनी बूटी वर्णव्यवस्था के प्रति जहर उगल कर जनसाधारण को भरमाती हैं। वहीं धर्मवेता-आर्य कहीं सोये पड़े हैं। वर्णव्यवस्था की वकालत करने का साहस ही नहीं कर पा रहे हैं। आश्चर्य है ऐसे में फूट के रोग-जातिवाद के समूल नाश की वर्णव्यवस्था रूपी घुट्टी कोई पीयेगा तो पीयेगा कैसे?

नये-नये नाम, नई-नई जातियां, नये-नये मॉडल यह सब वर्णव्यवस्था से हमारा ध्यान भटकाने के लिए हैं। आर्यो, आर्य प्रचारकों, ऋषि अनुगन्ताओ! हमें भ्रमित नहीं होना है, हमें आर्य सिद्धान्तों का उदारीकरण किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं है। हमें समझौता नहीं समाधान चाहिए। जहाँ अम्बेडकर जातियों के नाम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के स्थान पर Gen., OBC, BC, SC, ST रखकर सन्तुष्ट हो गये वहीं संघ एकात्मवाद की झिल्ली अवधारणा भी शीत युद्ध को समाप्त नहीं कर पा रही है। देश भर का आकलन करने से परिज्ञान होता है कि दावा चाहे जो भी हो, लेकिन ऐसी समरसता सम्भव नहीं है। जिन प्रदेशों में दशकों तक RSS की मर्जी के अनुसार शासन चला, वहां भी कोई समरसता नहीं आई है।

इसिलिए हमें मूल समाधान पर ही विचारना है और मूल समाधान वर्णव्यवस्था है जो गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित है। जिसे मनुस्मृति में व्याख्यायित किया गया है। जिसे महाभारत के युग में जन्म-जात, जातिवाद में बदल दिया गया। वर्णव्यवस्था लागू करने के लिए दृढ राजकीय इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। जातिवाद स्वार्थ का प्रतीक है, वहीं वर्णव्यवस्था परमार्थ, राष्ट्रवाद की द्योतक है। जो जन जन्म-जात दलित बने रहना चाहते हैं, SC, ST, OBC, BC बने रहना चाहते हैं वे अम्बेडकर के हत्यारे हैं। अम्बेडकर ने भी उचित समय पर विचार करने हेतु कहा है। ऊंच-नीच SC/ST, BC, OBC, Gen. सब में है लेकिन पिछले 70 वर्षों में कुछ कम हुई है। अब समय आ गया है कि एक देश, एक धर्म, एक जाति और एक वर्णव्यवस्था अर्थात् गुण-कर्म-स्वभावानुसार हर हाथ को काम मिले। कहीं कोई भ्रष्टाचार न हो, कहीं दबाव न हो। लेकिन प्रशासन को डराने-धमकाने, दबाव बनाने के लिए ही कभी भारत बन्द, कभी उपवास, कभी आगजनी, कभी कुछ-कभी कुछ! और ऐसा ही दबाव डालने वाले गांधी को डॉ॰ अम्बेडकर ने टका सा जवाब दिया था कि तुम्हारे उपवास का मुझ पर कोई असर न पड़ेगा।

वर्णव्यवस्था लागू करने के लिए हमें इसी दृढ़ता की आवश्यकता होगी। स्वार्थी जन चीखेंगे, चिल्लायेंगे, सारे भारत को सर पर उठायेंगे, कभी मुसलमान होने का भय दिखायेंगे, कभी बौद्ध होने का, कभी भारत को टुकडे-टुकडे करने की धमकियां देंगे। पर हमें डरना नहीं है, घबराना नहीं है। जन-जन को समझाना है जिनकी रगों में आर्य पूर्वजों का रक्त प्रवाहित हो रहा है कि वर्णव्यवस्था अर्थात् गुण-कर्म-स्वभाव योग्यतानुसार व्यवस्था से भले ही वर्तमान में स्वार्थपूर्ति न हो पर यह समाज के लिए अमृत तुल्य है। राष्ट्रीय एकता की जननी है। वर्ण व्यवस्था के बिना समरसता कोरी बकवास है, सम्भव ही नहीं है। आज अनपढ़ अध्यापक बन रहे हैं, मूर्ख डॉक्टर बन रहे हैं, नासमझ इंजीनियर बन रहे हैं! केवल डिग्री का जामाना है चाहे पैसे से ली हो, चाहे नकल करके ली हो, चाहे आरक्षण से प्राप्त की हो! योग्यता सफलता को प्राप्त नहीं कर पा रही। मावन मन कुण्ठित है, अवसाद में है। भारत की लगभग 20% आबादी इस रोग की शिकार है। आओ वर्णव्यवस्था लायें, जातिवाद मिटायें एवं जन-जन को सुखी करें। यही आर्यत्व है। यही ईश्वर का आदेश है!

संध्या काल

ज्येष्ठ- प्रथम मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5119, वि. 2075

(1 मई 2018 से 29 मई 2018)

प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)

सांय कालः 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

ज्येष्ठ-द्वितीय मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5119, वि. 2075

(30 मई 2019 से 28 जून 2019)

प्रातः कालः 5 बजकर 15 मिनट से (5.15 A.M.)

सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से (7.15 P.M.)

भौतिक व दार्शनिक विद्या में सामंजस्य

-आचार्य वेद प्रकाश

संघ लोक सेवा आयोग UPSC की परीक्षा में फिलासॉफी (Philosophy) भी एक सरल विषय है। फिलासॉफी अर्थात् दर्शनशास्त्र। दर्शन की विद्या एक अलग विद्या है! सामान्य रूप से एक बालक विद्यालय में गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, भाषा (अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत आदि), चित्रकला, संगीत या समाज शास्त्र आदि पढ़ता है...। पर विद्या के इस क्रम में वह बालक ईश्वर, आत्मा, पुर्नजन्म, मृत्यु, मुत्यु के बाद के रहस्यों, कर्म फल के सिद्धान्त आदि ऐसे किसी विषय को 12वीं तक कभी नहीं पढ़ता। बालक की तार्किक क्षमता के विकास का तो प्रयत्न किया जाता है-पहाड़े Tables, Permutations, Combination, Probability, Integration, Differentiations आदि पढ़ाकर गणित में कुशल बना देते हैं। Physics (भौतिक विज्ञान)पढ़ाकर कुछ हद तक आस-पास की हो रही घटनाओं का, गति के नियम का, प्रकाश के गुण-लक्षण, उर्जा (Enrergy) के प्रकार आदि से Gravitational Force, Electromagnetic Force आदि से कुछ दृष्ट जगत के नियम समझ में आने लगते हैं। इतिहास से कुछ हद तक पूर्वजों के जीवन-चरित्र, व्यवहार व साधनों का पता चल जाता है। गीत-संगीत चित्रकला से मनोरंजन के साधन व ज्ञान पर भी प्रकाश पड़ता है।

पर विद्या के इस क्रम में यह कभी नहीं पता चलता कि ईश्वर है या नहीं? नहीं है तो कोई बात नहीं, यदि है तो कैसा है? मनुष्य के आकृति का या पशु-पक्षी जैसा या Alien जैसा? 4 मुख वाला या 10 हाथों वाला? रक्त-मांस-अस्थि से बना हुआ है या चमकीला प्रकाश युक्त है, वह ईश्वर है? कहाँ रहता है? यह so called कथित ईश्वर-किसी पहाड़ विशेष पर जैसे- कैलाश पर या जम्मू के कटरा से ऊपर? या समुन्द्र विशेष में क्षीर सागर आदि में? या सातवें आसमान पर या चौथे आसमान पर? यदि यह ईश्वर सर्वव्यापक है तो क्या dead body शव/लाश में भी रहता है?

वर्तमान शिक्षा के पाठ्यक्रम में यह कहीं नहीं पढ़ाया जाता कि यह ईश्वर क्या करता है? कोई कहता है कि देखो ऊँगली पर पहाड़ उठा देता है। द्रोपदी के वस्त्र बढ़ाता रहता है, तो कोई कहता है कि उज्जैन में हवा के विपरीत झण्डा फहराता है! कोई नहीं समझाता कि इसके पीछे वास्तविकता क्या है?

विद्यालयों के पाठ्यक्रम में कहीं यह जानने को नहीं मिलता कि क्या यह ईश्वर हमारे पापों को क्षमा भी कर देता है? क्या हमारे शत्रुओं को पराजित भी करता है? धन-सम्पत्ति भी दिलाता है क्या? अच्छा पति-पत्नी या पुत्र भी दिला सकता है क्या ईश्वर? दसवीं कक्षा, बारहवीं कक्षा या स्नातकादि तक में कहीं नहीं बताते हैं कि शरीर में आत्मा होती है या नहीं? नहीं होती तो कोई बात नहीं, पर यदि होती है तो शरीर में कहाँ रहती है? कैसी आकृति है आत्मा की? कितनी बड़ी होती है आत्मा? क्या पुरुषों में व स्त्रियों-पुरुषों में समान होती है आत्मा? या फिर अलग-अलग? पाठ्यक्रम में कहीं नहीं बताते कि सभी जीवों में एक जैसी आत्मा होती है क्या? मृत्यु के बाद कहाँ चली जाती है यह आत्मा? मृत्यु के बाद इस आत्मा को कोई लेकर जाता है या स्वयं चली जाती है? आत्मा अकेली जाती है या कुछ चीजें भी साथ-साथ जाती हैं? विद्यालय में कहीं नहीं पढ़ाते कि किसी बालक का जन्म अम्बानी, अडांनी आदि धनाढ्य परिवार में हुआ तो किसी बालक का जन्म निर्धन परिवार में क्यों हुआ, जहाँ कुपोषण व बीमारी से बालक दु:ख सहता रहता है? अभी जो बालक पैदा भी नहीं हुआ, जिसने कोई कर्म भी नहीं किए, वह विकलांग क्यों हो जाता है? कोई टीचर लेक्चरर या प्रोफेसर यह नहीं बताता कि गर्भस्थ शिशु में चेतना कहाँ से आ गई?

स्कूलों के पाठ्यक्रम में physics chemistry व mathematics आदि पढ़ाकर कुछ तर्कशील तो बना देते हैं पर उपरोक्त पूछे गए आत्मा-परमात्मा, ईश्वर के प्रश्नों जैसे हजारों प्रश्न जीवन भर अनुत्तरित रह जाते हैं और सामान्य चर्चा भी कहीं नहीं होती है।

कोई यह कहे कि इन विषयों (आत्मा, परमात्मा, जन्म, मृत्यु, कर्मफलादि के सिद्धान्त आदि) से संबन्धित प्रश्नों का जीवन में कोई महत्व नहीं तो मित्रों! जान लो, चाहे कोई डॉक्टर हो या इंजिनियर, प्रशासक हो या वकील, व्यापारी हो या उद्योगपति, लगभग सभी किसी बाबा से, मौलवी से, संत से या मंदिर आदि से जुड़े रहते हैं इन्हीं विषयों की सामान्य जानकारी प्राप्त करने के लिए। जो जितना धन कमा लेता है, उतना ही मोटा पैसा इनके पास दान कर आता है। अन्यथा किसी राम-रहिम के पास 10,000 करोड़ की सम्पत्ति या सत्य साई के पास 50,000 करोड़ की सम्पत्ति कहाँ से आ जाती है? तिरुपति मंदिर में सैकड़ों करोड़ों के चढ़ावे चढ़ाते हैं। साई मंदिर, सिद्धि विनायक मंदिर या फिर वैष्णों मंदिर में अकूत खजाना इकट्ठा होता रहता है।

बिना पुरुषार्थ किए 'त्वरित सफलता' पाने के लिए लोग 'निर्मल बाबा' जैसे लोगों के पास अपनी कमाई का दसवाँ हिस्सा (दसबंद) इमानदारी से देते हैं। भाग्य व भविष्य बताने वाले ज्योतिषियों की न सिर्फ टीवी पर भरमार है बल्कि ये हमारे चारों ओर खूब पुष्पित-पल्लवित हो रहे हैं। लोग ठगे जा रहे हैं बाबाओं के यहां, मंदिरों में, आश्रमों में, टीवी पर या दैनिक जीवन में। हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इन दार्शनिक विषयों की चर्चा न होने के कारण से भी इस प्रकार से भौतिक विद्या में पारंगत होते हुए भी ऐसे लोगों के द्वारा ठगे जाते रहते हैं।

क्योंकि उन्हें पढ़ाया नहीं गया ईश्वर के बारे में, उन्हें बताया नहीं गया कि पाप क्षमा हो जाते हैं या नहीं? उन्हें समझाया नहीं गया कि हमें अपने कर्मों की सजा मिलनी ही मिलनी है। किसी स्कूल में, किसी पाठ्यक्रम में या किसी व्यवस्था में यह बताया ही नहीं गया कि जो हम कर्म कर चुके हैं वह किसी बाबा द्वारा या देवी-देवता द्वारा या गंगादि नदियों द्वारा धोए नहीं जा सकते। उन्हें भुगतना ही भुगतना है।

हमारे ऋषियों-मुनियों ने इन विषयों पर चर्चा की है, मनन किया है। यही विद्या कहलाती है दर्शनविद्या (फिलासॉफी)। इन दर्शनों को पढ़कर-पढ़ाकर, ठीक-ठीक समझ कर, ठीक-ठीक समझा कर हम पुन: अपने नागरिकों को गर्त में गिरने से बचा सकेंगे। इन बाबाओं के आश्रमों के व कथित मंदिरों के चंगुल से निकाल सकेंगे। राष्ट्र को पुन: वैभव के शिखर पर ले जा सकेंगे। आवश्यकता है पुन: philosophy को-दर्शन शास्त्र को गणित व अन्य भौतिक विद्याओं के साथ-साथ पढ़ाने की। विज्ञान के साथ-साथ आत्मा-परमात्मा के विषय को समझाने की। भूगोल व समाजशास्त्र के साथ-साथ कर्मफल सिद्धान्त पढ़ाने की महती आवश्यकता है। अन्यथा हम आपने वंशजों को दर्शनों की उस अलौकिक विद्या से विहीन कर देंगे, जिसे प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है एक सामान्य जीवन के लिए भी...।

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा (हरियाणा) के पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल

आर्य छात्र ओम् आर्य राष्ट्र
राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-कैथल
स्थानः जाट वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कैथल
तिथिः 02 जून से 06 जून 2018
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- प्रवीण आर्य-9991443034, रोहित आर्यः 8529173750

आर्य छात्र ओम् आर्य राष्ट्र
राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-रोहतक
स्थानः सिंहपुरा गुरुकुल, जीन्द रोड़ रोहतक
तिथिः 02 जून से 06 जून 2018
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- प्रवीण आर्य-8168567801

आर्य छात्र ओम् आर्य राष्ट्र
राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-झज्जर, गुरुग्राम, रेवाड़ी
स्थानः ग्रामीण सीनियर से॰ स्कूल, छोछी रोड़, छारा, झज्जर
तिथिः 03 जून से 07 जून 2018
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- प्रदीप शास्त्री-9034469045

आर्य छात्र ओम् आर्य राष्ट्र
राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-करनाल
स्थानः आर्यसमाज मॉडल टाऊन, करनाल
तिथिः 06 जून से 10 जून 2018
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- कृष्ण आर्य-8053132720

आर्य छात्र ओम् आर्य राष्ट्र
राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-भिवानी, चरखी दादरी, महेन्द्रगढ़
स्थानः सनराईज सीनियर से॰ स्कूल, चन्देनी, चरखी दादरी
तिथिः 06 जून से 10 जून 2018
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- धर्मवीर आर्य-9812428391

आर्य छात्र ओम् आर्य राष्ट्र
राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-हिसार
स्थानः रिद्धनाथ पब्लिक स्कूल, गांव बालक, हिसार
तिथिः 06 जून से 10 जून 2018
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- 9034763824, 9812911013

आर्य छात्र ओम् आर्य राष्ट्र
राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-जीन्द
स्थानः राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गांव जुलाना, जीन्द, हरियाणा
तिथिः 11 जून से 15 जून 2018
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- मनजीत आर्य-8684842014

आर्य छात्र ओम् आर्य राष्ट्र
राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-कुरुक्षेत्र, यमुना नगर
स्थानः गीता आदर्श एजुकेशन कॉलेज, गांव मेहरा, कुरुक्षेत्र
तिथिः 13 जून से 17 जून 2018
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- अभिषेक आर्य-8929513132

आर्य छात्र ओम् आर्य राष्ट्र
राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-पानीपत, सोनीपत
स्थानः एस. आर. आर्य पब्लिक स्कूल, गांव सिवाह, पानीपत
तिथिः 20 जून से 24 जून 2018
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- रवि आर्य-9896000406

आर्य छात्र ओम् आर्य राष्ट्र
राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-पलवल, फरीदाबाद, नूहं
स्थानः मॉडर्न विद्या मंदिर, गांव आली ब्राह्मण, पलवल
तिथिः 27 जून से 01 जुलाई 2018
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- सुमेर आर्य-7015831211, 8950516523

अधिक जानकारी के लिए राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के हरियाणा प्रान्त अध्यक्ष आर्य अमनदीप से सम्पर्क करें- 7015749403

आर्य प्रचारक कक्षा आर्य गुरुकुल महाविद्यालय करनाल

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट–

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक **www.aryanirmatrisabha.com/पत्रिका** पर जाएं।

01 मई–29 मई 2018 **ज्येष्ठ (प्रथम)** ऋतु– ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
	विशाखा कृष्ण प्रतिपदा 1 मई	अनुराधा कृष्ण द्वितीया 2 मई	ज्येष्ठा कृष्ण तृतीया 3 मई	मूल कृष्ण चतुर्थी 4 मई	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण पंचमी 5 मई	उत्तराषाढ़ा कृष्ण षष्ठी 6 मई
श्रवण कृष्ण सप्तमी 7 मई	श्रवण कृष्ण अष्ठमी 8 मई	धनिष्ठा कृष्ण नवमी 9 मई	शतभिषा कृष्ण दशमी 10 मई	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण एकादशी 11 मई	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण द्वादशी 12 मई	रेवती कृष्ण त्रयोदशी 13 मई
अश्विनी कृष्ण चतुर्दशी 14 मई	भरणी कृष्ण अमावस्या 15 मई	कृतिका शुक्ल प्रतिपदा 16 मई	रोहिणी शुक्ल द्वितीया 17 मई	आर्द्रा शुक्ल तृतीया/चतुर्थी 18 मई	पुनर्वसु शुक्ल पंचमी 19 मई	पुष्य शुक्ल षष्ठी 20 मई
आश्लेषा शुक्ल सप्तमी 21 मई	मघा शुक्ल अष्ठमी 22 मई	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल नवमी 23 मई	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल दशमी 24 मई	हस्त शुक्ल एकादशी 25 मई	चित्रा शुक्ल द्वादशी 26 मई	स्वाती शुक्ल त्रयोदशी 27 मई
विशाखा शुक्ल चतुर्दशी 28 मई	अनुराधा शुक्ल पूर्णिमा 29 मई					

30 मई–28 जून 2018 **ज्येष्ठ (द्वितीय)** ऋतु– ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
		ज्येष्ठा कृष्ण प्रतिपदा 30 मई	मूल कृष्ण द्वितीया 31 मई	मूल कृष्ण तृतीया 1 जून	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण चतुर्थी 2 जून	उत्तराषाढ़ा कृष्ण पंचमी 3 जून
श्रवण कृष्ण पंचमी 4 जून	धनिष्ठा कृष्ण षष्ठी 5 जून	शतभिषा कृष्ण सप्तमी 6 जून	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण अष्ठमी 7 जून	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण नवमी 8 जून	रेवती कृष्ण दशमी 9 जून	अश्विनी कृष्ण एकादशी 10 जून
भरणी कृष्ण द्वादशी 11 जून	कृतिका कृष्ण त्रयोदशी/चतुर्दशी 12 जून	रोहिणी कृष्ण अमावस्या 13 जून	मृगशिरा शुक्ल प्रतिपदा 14 जून	आर्द्रा शुक्ल द्वितीया 15 जून	पुनर्वसु शुक्ल तृतीया 16 जून	पुष्य शुक्ल चतुर्थी 17 जून
मघा शुक्ल पंचमी 18 जून	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल षष्ठी/सप्तमी 19 जून	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल अष्टमी 20 जून	हस्त शुक्ल नवमी 21 जून	चित्रा शुक्ल दशमी 22 जून	स्वाती शुक्ल एकादशी 23 जून	विशाखा शुक्ल द्वादशी 24 जून
अनुराधा शुक्ल त्रयोदशी 25 जून	अनुराधा शुक्ल त्रयोदशी 26 जून	ज्येष्ठा चतुर्दशी 27 जून	मूल शुक्ल पूर्णिमा 28 जून			

Rishi Dayanand - His Life And Work -Saroj Arya, Delhi

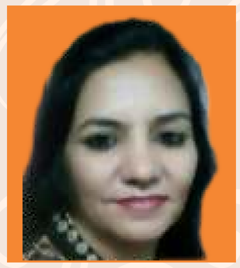

Sri Gopal created stir in the neighborhood by nailing the document to a pole near the place where Swamiji was putting up, and hoisted his so-called 'dharma dhwaja'! When the Pandit was asked to go to Swamiji's place for shastrartha, he replied, "If I go there, I shall be defeated, and if the Swami comes to me, he will be defeated. The Swami's abode is under the influence of some charm. The Swami's reply to those who went to him was, "Is it any use holding discussion with a man who cannot so much as tell the masculine from the feminine gender ?"Sri Gopal's discomfiture did not silence the orthodox people of Farrukhabad and they sent for Pt. Haldar Ojha from Kanpur. The discussion came off on June, 19, 1869, the subject being idol-worship. Haldar who was a tantrika and believed in taking wine, gratification of lower passions, etc., for the attainment of mukti (salvation), made efforts to side-track the issue by Starting a defense of drinking. He began quoting chapter and verse in support of his case, but finding that he could not hold his own, he drifted into various matters that had absolutely no bearing on the subject under discussion. The Shastratha lasted till one o'clock in the night and was resumed the next evening. Despite his tangential flight from the matter in hand, he felt himself in a quandary over a grammatical point. Not able to stand the humiliation, he fainted and was taken away from the meeting in that sorry state.

Haldar Ojha had the audacity to meet Swamiji again in a similar discussion at Kanpur on July 31' 1869, but fared no better. It was a hung crowd that assembled to hear the shastrartha numbering no less than twenty thousand persons. Mr. Thaine, Assistant Collector who was a Sanskrit scholar of no mean repute was in the chair. As usual Ojha tried to beat about the bush, but Swamiji would not let him and he had to come to the point. It did not take Swamiji long to silence him with his unanswerable arguments.

"What do you believe in? Asked Thaine of Swamiji.

"In God alone."

"Then why do you perform Agnihotra and worship fire?"

"We don't worship fire. The material thrown into the fire is transformed into gaseous state and purifies the air."

Mr. Thaine, then took his and stick and left the meeting. The audience dispersed with shouts of 'Victory to Haldar-Hail Mother Ganges!' The editor of a local newspaper Shola-i-Toor was prevailed upon to publish an account of the discussion which should be adverse to Swamiji. It was read out to him and with his characteristic calmness and well-wishers who felt hurt at the wrong that had been done to their guru, and they called on Mr. Thaine and requested him to let them know if he considered the account that had been published fair and just. Thereupon he wrote his own decision and handed it over to them. It reads thus:-

Gentlemen: At the time in function I decided in favor of Dayanand Saraswati, Faquir, and I believe his arguments are in accordance with the Vedas. I think he won the day. If you wish it, I will give you my reasons for my decision in few days.

yours obediently,
B.W. Thaine Cawnpore.
7th August, 1869.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

मुझे आर्य समाज द्वारा आयोजित सत्र 'आर्य निर्माण' 'राष्ट्र निमार्ण' की सत्र कक्षा में काफी चीजों के बारे में पता चला है, जैसे- ईश्वर, धर्म, मनुष्य राष्ट्र, मानवता आदि।

मुझे इस सत्र से पहले इन सब चीजों के बारे में कुछ नहीं पता था। इस सत्र से मुझे काफी प्रेरणा मिली है। मैं इस सत्र के बारे में अपने गांव, कॉजेज आदि में भी चर्चा करूंगा कि आज हमारे देश की हालत क्या है और हमारा देश किस दिशा में जा रहा है। और हमें हमारे देश और संस्कृति की रक्षा कैसे करनी है। मैं आज से पहले सोचता था कि मेरा देश सुरक्षित है।

मैं मनीष कुमार सुपुत्र श्री सुभाष चन्द्र, गाँव दुजाना। मैं शपथ लेता हूँ कि इस आर्य सभा के सत्र से जो मुझे अनुभव हुआ है, जो भी कुछ इस सत्र में मुझे ज्ञान मिला है उससे प्रेरित होकर, आर्यसमाज से जुड़कर तन-मन-धन से राष्ट्र की एकता और अखण्डता की रक्षा करने के लिए तत्पर रहूँगा।

नामः मनीष कुमार, आयुः 20 वर्ष, योग्यताः स्नातक दूसरा वर्ष, पताः बेरी-झज्जर, हरियाणा।

मेरा अनुभव बहुत अच्छा रहा क्योंकि आज से पहले मैं सोचता था कि ईश्वर है क्या, उनकी परिभाषा या उनको हम किन मापदण्डों पर मान सकते हैं और हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण क्या है? जैसे-बुद्धि। धर्म के बारे में भी बहुत अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ, पहले तो समझता था कि हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, यहूदी इत्यादि से ही धर्म हैं। ईश्वर है या नहीं इसमें भी मैं पहले असमंजस की स्थिति में था जो कि आदरणीय आचार्य जी ने बड़ी सहजता के साथ वह स्पष्ट किया।

अतः अन्ततः मैं ये ही कहना चाहुँगा कि पहले से ही मैं बहुत असमंजस की स्थितियों में डूबा हुआ था लेकिन इस सत्र को ज्वाईन करने के उपरान्त मेरे बहुत से असमंजस दूर हो गए।

मैं हर सम्भव राष्ट्रीय आर्य निर्माण सभा में अपना सहयोग देने के लिए तत्पर हूँ, जैसे अन्य मित्रों को इससे जोड़ना, कुछ परिस्थितियों में मैं प्रचार भी कर सकता हूँ, अपनी स्थिति अनुसार आर्थिक सहायता भी प्रदान करने के लिए तत्पर रहूँगा।

नामः गजेन्द्र कुमार, आयुः 28 वर्ष, रिसर्च असिस्टेंट, पताः गाँव बडौली, जिला पलवल, हरियाणा।

ये मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है कि मुझे इस लघुगुरुकुल सत्र में प्रशिक्षण लेने का अवसर मिला। आज से 12 वर्ष पूर्व जब घर पर सामवेदपारायण यज्ञ करवाया था उस समय मेरे मस्तिष्क में ये विचार आया था कि आर्यों के पास सबसे बड़ा साहित्य है लेकिन धर्म की शिक्षा के लिए कोई व्यवस्थित कार्यक्रम नहीं है। जैसा कि मुस्लिम मदरसों में, ईसाई चर्चों में, सिख गुरुद्वारे में अपने बच्चों को व्यवस्थित पाठ्यक्रम पढ़ाते हैं।

इसकी चर्चा मैंने कई संन्यासियों से की थी लेकिन कोई सटीक उत्तर नहीं मिल सका। लेकिन कल और आज के दो दिवसीय सत्र से जुड़कर मुझे यह सम्भव लग रहा है जिसे में चाहता था। और आगे इस कार्यक्रम से जुड़कर मैं अपने समाज राष्ट्र के लिए अपना पूर्ण यहयोग दूंगा।

मैं तन-मन-धन से आर्य निर्माण के इस महान कार्यक्रम में अपना सहयोग दूंगा और जब भी देश की रक्षा के लिए आवश्यकता होगी कम से कम एक विधर्मी को अपने देश से जरूर कम कर दूंगा।

नामः बासदेव, आयुः 53वर्ष, योग्यताः बारहवीं, पताः जवाहर कॉलोनी, फरीदाबाद, हरियाणा।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के तत्वाधान में 'उप प्रधान- आर्य समाज लाडपुर' (श्री संजीत जी) की प्रेरणा से मेंने दो दिन का यह सत्र किया, सत्र का अनुभव बहुत ही उम्दा, ज्ञानवर्धक रहा। आर्य समाज के विषय में कई पुराने भ्रम दूर हुए एवं देश की वर्तमान स्थिति का हमें बोध हुआ। सत्रोपरान्त अपने अन्दर एक नई ऊर्जा महसूस हो रही है, वास्तव में आर्यसमाज ही देश और समाज के लिए कार्य कर रहा है। मैं भाग्यशाली समझता हूँ अपने आपको आर्य समाज से जोड़कर। आर्य आर्य-जय आर्यावर्त्त।

मैं आर्य समाज में आर्य प्रचारक के रूप में अपना सहयोग देना चाहता हूँ।

नामः नवीन रोहिल्ला, आयुः 32 वर्ष, योग्यताः एम.ए., बी.एड., कार्यः अध्यापक, पताः लाडपुर, दिल्ली-81

छात्र गुरुकुल

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा हरियाणा प्रान्त में 10 स्थानों पर जून मास में पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल लगा रही है, इस गुरुकुल में छात्रों को शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक विकास हेतु प्रशिक्षण दिया जायेगा। जिससे छात्रों का एक योग्य नागरिक के रूप में विकास हो सके। यदि आप चाहते हैं कि हमारे बालक देश-धर्म को जानें तो इस पञ्चदिवसीय गुरुकुल में अवश्य भेजें। इसमें कक्षा 5 से कक्षा 10 तक के छात्र भाग ले सकते हैं। प्रत्येक स्थान पर अधिकतम 100 छात्रों को लिया जाएगा। अतः आप सब से निवेदन है कि अतिशीघ्र पंजीकरण करवा लें। अन्य किसी जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

अमनदीप आर्य, प्रान्तीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा, हरियाणा -7876854056, 7015749403

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।